International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 464-468

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 464-468
www.allresearchjournal.com
Received: 05-08-2020
Accepted: 07-09-2020

विशाल चौधरी
पी0एचडी0 शोधार्थी
के.आर.(पी.जी.) कॉलेज, मथुरा,
उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
विशाल चौधरी
पी0एचडी0 शोधार्थी
के.आर.(पी.जी.) कॉलेज, मथुरा,
उत्तर प्रदेश, भारत

मथुरा जिले के उद्योगों के विकास में परिवहन साधनों का योगदान

विशाल चौधरी

सारांश
औद्योगीकरण तथा औद्योगिक विकास को अधिकांश तथा आर्थिक विकास का सूचक तथा इंजन माना जाता है। उद्योगों का स्थायीकरण कई प्रकार के औद्योगिक कारकों पर निर्भर करता है। इसमें कच्चे माल की उपलब्धता, शक्ति परिवहन के साधन सस्ता व कुशल श्रमिक व सरकार की नीति में से परिवहन के साधन का उद्योगों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहता है।
स्वतंत्रता से पहले भारतीय उद्योग पिछड़ी अवस्था में थे। अंग्रेज शासकों ने केवल उन्हीं उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जो हित में थे। 1947 में स्वतंत्रता के साथ ही देश का विभाजन हो गया। इससे अर्थव्यवस्था की नींव कमजोर पड़ गई और इससे उद्योगों के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। 1948 में औद्योगिक नीति लाई गई, जिसमें औद्योगिक विकास की दशा निर्धारित की गई जिसमें कहा गया कि उद्योगों के विकास के लिये परिवहन साधनों का विकास किया जाये।

प्रस्तावना:
जनपद मथुरा में चार तहसीलें गोवर्धन, मॉट, छाता और मथुरा है। आज के युग में उद्योगों के विकास में यातायात का विशेष स्थान रखते हुए मानव की आवश्यकताऐं बढ़ गई हैं। अतः इनकी पूर्ति किसी स्थान या देश के स्थानीय उत्पादन से पूरी नहीं हो सकती है। अतः उनके पास जो बस्तुऐं अधिक होती हैं तब उनकी आवश्यकता वाले स्थानों पर भेज दी जाती हैं। इस प्रकार की वस्तुओं का विनिमय परिवहन के विकास पर ही सम्भव है।
परिवहन सुविधाओं के कारण अध्ययन क्षेत्र के उत्पादन की क्षमता भी बढ़ गयी है। वस्तुतः किसी क्षेत्र के संसाधनों का उपयोग परिवहन के विकास पर बहुत कुछ निर्भर करता है। मथुरा जनपद के उद्योगों के विकास में यातायात के साधन सड़क, रेल व जल परिवहन का प्रमुख योगदान है।

अध्ययन का उद्देश्य –
औद्योगीकरण किसी भी राष्ट्र की उन्नति की मेरूदण्ड होता है। भूगोल विद एवं अर्थशास्त्री विभिन्न दृष्टिकोणों से औद्योगीकरण का अध्ययन करते हैं
अर्थशास्त्री केवल आर्थिक पक्षों जैसे श्रम पूँजी व्यापार परिवहन साधन आदि को ही सम्मिलित करते हैं।
प्रस्तुत शोध पत्र मथुरा जिले के उद्योगों के विकास में यातायात साधनों के योगदान के अध्ययन के साथ जनपद मथुरा में उद्योगों के विकास की सम्भावनाओं का आंकलन कर एक प्रारूप तैयार करना, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों की निर्धन जनता का जीवन स्तर बढ़ सके और वे ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार की तलाश में पलायन कर नगरीय क्षेत्रों की ओर न भागें।

1. मथुरा जनपद में वर्तमान में कार्यरत उद्योगों का अध्ययन कर इनके विकास का अध्ययन करता है। जिससे भविष्य में औद्योगिक को विकसित करने के लिये यातायात के संसाधनों को विकसित करने के लिये औद्योगिक पृष्ठ भूमि तैयार की जा सके।
2. क्षेत्र के समकालीन विकास के लिये योजनाओं का प्रस्तुतीकरण एवं निर्धारण करना।

विधि तंत्र –
प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु आंकड़ों का संकलन विभिन्न श्रोतों से करने का प्रयास किया गया है। आंकड़ों का संकलन प्राथमिक द्वितीयक व साक्षात्कार के माध्यम से किया गया है। द्वितीय आंकड़े ब्लॉक स्तर पर किये गये हैं। प्राथमिक आंकड़ों का संकलन प्रश्नावली तथा साक्षात्कार विधि से किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र –

मथुरा तहसील में 10 विकास खण्ड तथा 89 न्याय पंचायत एसं 479 ग्राम समाये हैं। 887 ग्रामों की संख्या है। जनपद मथुरा वह पावन स्थली है जहां कर्मयोगी भगवान श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। मथुरा जनपद उ0प्र0 की पश्चिमी सीमा पर यमुना नदी के तटीय भाग में स्थित है। इसके पूर्व में जनपद महामाया नगर, उत्तर में अलीगढ़ जनपद, द0पू0 में जनपद आगरा, द0प0 में राजस्थान प0उ0 में हरियाणा जनपद का अशासीय विस्तार 27014′ तथा 27057′ एवं देशान्तरीय विस्तार 77017′ से 78012′ के मध्य स्थित है। जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 38.11 वर्ग किमी0 है। कुल जनसंख्या 1931186 है।

जनपद मथुरा: अवस्थिति मानचित्र

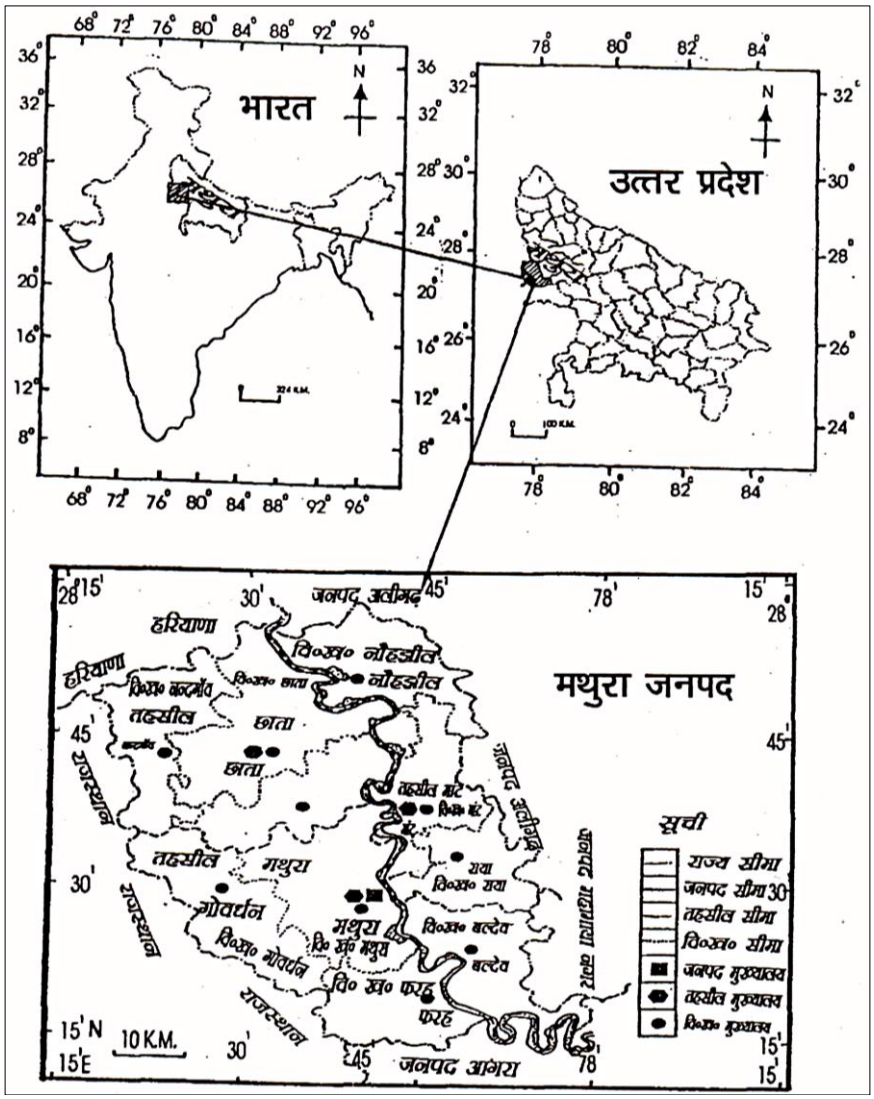

वर्तमान समय में औद्योगिक युग में उर्जा का विशेष स्थान है। आदि मानव की कार्य क्षमता इसलिये कम थी क्योंकि उसे प्रारम्भिक काल में स्वयं की शक्ति के अतिरिक्त किसी अन्य शक्ति का ज्ञान नहीं था लेकिन ज्योंही उसे आग का ज्ञान हुआ उसे लकड़ी और घास से उर्जा प्राप्त होने लगी। उसने पशु और जल का शक्ति का उपयोग सीखकर अपनी कार्य क्षमता में कई गुनी वृद्धि करने में सफलता प्राप्त की। अब वह अधिक बोझ ढोने, तेज चलने, खेत जोतने, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल्दी पहुँचने के लिये जानवरों को वश में कर तथा पहियेदार गाड़ी का निर्माण कर महारत हॉसिल कर लिया। फलतः उसे भोजन सामग्री इकठ्ठा करने के लिये भटकने के स्थान पर कृषि, व्यापार, लघु उद्योग आदि विकसित कर जीवन यापन करने की क्षमता आ गई, लेकिन जब उसने कोयला, तेल और विद्युत का ज्ञान प्राप्त किया तो उसकी क्षमता कई सौ गुनी बढ़ गई। इन ऊर्जा श्रोतों के प्रयोगों से मानव के जीवन की धारा ही बदल गई। अब वह यंत्रों का आविष्कार कर इन ऊर्जा श्रोतों से अधिक उत्पादन, अधिक व्यापार और अधिक आर्थिक सुरक्षा सृजित कर तीव्रगति से विकास करने में सफल हो सका। आज जो प्रगति कुछ दिखाई दे रही है उसमें ऊर्जा श्रोतों का योगदान सबसे अधिक है। कई हजार वर्षो में जो प्रगति मानव समुदाय पहले नहीं कर सकता था, उससे कई गुनी अधिक प्रगति केवल पिछले दो सौ वर्षो में करके मानव ने प्रगति का कीर्तिमान स्थापित किया है। 19वीं एवं बीसवीं सदी में इन ऊर्जा श्रोतों ने मानव को अति महत्वपूर्ण शक्ति प्रदान की है। हवाई यातायात, रेल एवं सड़क परिवर्तन, विशाल जलपोत और बड़े–बड़े कारखाने इसके प्रमाण हैं।

आधुनिक उद्योगों को जन्म देने में शक्ति के श्रोत की सबसे बड़ी भूमिका रही है। कोयला, खनिज तेल, जल विद्युत और अणु शक्ति प्रमुख शक्ति के श्रोत हैं, लेकिन अब खनिज तेल और प्राकृतिक गैस ने अपना स्थान अधिक महत्वपूर्ण बना लिया है। यह सर्वविदित है कि कच्चे माल की उपस्थिति के बावजूद यदि शक्ति के साधनों का अभाव हो तो उद्योग की स्थापना कठिन

होती है लेकिन यदि शक्ति का साधन मौजूद है तो कच्चा माल आयात किया जा सकता है।

अध्ययन क्षेत्र मथुरा जनपद में ऊर्जा का प्रमुख श्रोत विद्युत आपूर्ति है। विद्युत आपूर्ति स्वयं इंडियन ऑयल कारपोरेशन द्वारा लगे प्लान्ट द्वारा से भी की जा रही है। इसके अतिरिक्त विद्युत की आपूर्ति पनकी पावर स्टेशन से आपूर्ति की जाती है। मथुरा रिफाइनरी में विद्युत ऊर्जा के अतिरिक्त पावर जेनरेटर भी विद्यमान है जो मथुरा रिफाइनरी में विद्युत आपूर्ति करते हैं।

परिवहन (यातायात साधन) रेल/सड़क–

उद्योगों में परिवहन के साधनों की भूमिका बहुत प्रभावी होती है। कहा जा सकता है कि औद्योगिक जीवन संचार की जिम्मेदारी परिवहन के साधन ही निभाते हैं। कच्चा माल कारखाने तक पहुँचारा, तैयार माल बाजार तक पहुँचाना और श्रमिकों को घर से कारखाना लाने ले जाने की जिम्मेदारी होती है। परिणामतः उद्योगों का परिवहन के साथ परस्पर सह सम्बन्ध है। परिवहन के साधनों में सड़क, रेल तथा वायु यातायात प्रमुख साधन हैं।

आधुनिक विश्व में संचार के साधनों ने जहाँ मानव की वैचारिक आदान–प्रदान दूरियों को अत्यधिक कम किया है, वहीं परिवहन योजना का मुख्य लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या एवं वस्तुओं की गतिशीलता में वृद्धि करने में परिलक्षित है। वस्तुतः यातायात की सुविधा उपर्युक्त वितरण एवं विपणन तथा ग्रामीण संसाधनों को प्रभावी गतिशीलता प्रदान करने हेतु आवश्यक है।

अध्ययन क्षेत्र में यातायात के प्रमुख साधन के रूप में नेशनल हाईवे–2 व रेल परिवहन दिल्ली–कन्याकुमारी मार्ग, रिफाइनरी से होकर गुजरता है, जिसके प्रभाव स्वरूप इस जनपद के अन्य क्षेत्रों में सम्पर्क अधिक दृढ़ रहता है तथा सांस्कृतिक आदान–प्रधान एवं विभिन्न अभिसंरचनात्मक सेवाओं एवं जन सुविधाओं में भी ये मार्ग इस क्षेत्र के लिये वरदान साबित हुए हैं। मथुरा रिफाइनरी में रेल बैगन के द्वारा माल/उत्पाद की ढुलाई होती है। यहॉ रेलवे ट्रैक रिफाइनरी के अन्दर गया है जिससे कच्चा माल व उत्पाद माल आयात निर्यात होता है। मथुरा जनपद के विकास में परिवहन सेवा महत्वपूर्ण घटक का काम कर रहा है। सड़क मार्ग से माल की ढुलाई निजी परिवहन एजेन्सियों व टैंकरों द्वारा माल का आयात निर्यात किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में कच्चे तेल का आयात पाईप लाइन द्वारा भी प्रमुख रूप से हो रहा है।

आज के युग में आर्थिक व्यवस्था में यातायात का विशेष महत्व है। मानव की आवश्यकताऐं बढ़ गई हैं। अतः इनकी पूर्ति किसी स्थान या देश के स्थानीय उत्पादन से पूरी नहीं हो सकती है। अतः जो वस्तुऐं उनके पास अधिक होती हैं, उन देशों से उसके बदले में वहॉ की अधिक उत्पन्न होने वाली वस्तुऐं मंगाई जाती हैं। इस प्रकार की वस्तुओं का विनिमय, परिवहन के विकास पर ही सम्भव है। परिवहन सुविधाओं के कारण अध्ययन क्षेत्र के उत्पादन की क्षमता भी बढ़ गयी है। क्षमता बढ़ोत्तरी केवल मात्रा में ही नहीं वरन् गुणवत्ता में भी हुई है। अध्ययन क्षेत्र में उसी वस्तु का उत्पादन अधिक किया जाता है, जिसके लिये भौगोलिक संसाधन एवं सुविधाऐं उपलब्ध हैं। अस्तु किसी क्षेत्र के संसाधनों का उपयोग परिवहन के विकास पर बहुत कुछ निर्भर करता है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद मथुरा में परिवहन के भोगोलिक अध्ययन में परिवहन के स्थानीयकरण, विकास, देश–प्रदेश के प्रादेशिक संश्लिष्ट में परिवहन की कार्यशीलता तथा परिवहन के कृषि, उद्योग, जनसंख्या, नगर, प्राकृतिक तत्वों एवं संसाधनों से सम्बन्ध का विश्लेषण किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में भौगोलिक तत्वों के रूप में परिवहन की अपनी विरल विशेषताऐं निम्नलिखित रूप से दृष्टिगोचर होती हैं–

1. अध्ययन क्षेत्र में परिवहन का उपयोग उत्पादन वस्तुओं एवं व्यक्तियों के आवागमन के रूप में होता हैं
2. जनपद मथुरा में यह उत्पादन अनवरत होता रहता है। उत्पादन एवं उपभोग की प्रक्रिया साथ–साथ चलती है।
3. अध्ययन क्षेत्र में परिवहन उत्पादन की कीमत, माल या व्यक्ति के भाड़े के रूप में मिलती है।
4. परिवहन साधनों का वितरण रैखिक होता है। अतः यह उद्योग (जिसका वितरण क्षेत्रों पर मिलता है) आदि से मूलतः भिन्न प्रकार का उत्पादन है।
5. परिवहन एवं अन्य सभी प्रकार के उत्पादनों में सार्वभौमिक तकनीकी सम्बन्ध होता है।
6. परिवहन प्राकृतिक अथवा कृत्रिम मार्गो के लिये प्राकृतिक भौगोलिक वातावरण के विशेष तत्वों का विशेष प्रकार का उपयोग होता है।

परिवहन का सापेक्षिक महत्व–

आधुनिक युग में परिवहन का बड़ा महत्व है। आर्थिक गठन का प्रारम्भिक युग आत्मनिर्भरता का युग था। मानव अपनी आवश्यकताओं के सब पदार्थ अपने ही क्षेत्रों में पैदा करता था लेकिन आज की व्यापार प्रधान व्यवस्था में जब दो प्रदेशों के बीच परिवहन के विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों में परिवहन के अनेक स्थान देखने को मिलते हैं। प्राचीन काल में जब अजैविक शक्ति के साधनों का विकास नहीं हुआ था। मनुष्य एवं पशु परिवहन के माध्यम थे। सर्वप्रथम प्राचीनतम काल में मनुष्य स्वयं अपना बोझ एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता था। उसके बाद जब कुछ पशुओं को मनुष्य ने पालतू बनाया तब पशु ही परिवहन के प्रमुख माध्यमों में से एक हो गये और इस प्रकार किसी भी माध्यम के द्वारा व्यापार विस्थापित हो सकता है। तत्पश्चात् बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ी द्वारा परिवहन होने लगा। आज भी प्रारम्भिक आर्थिक तंत्रों में इस प्रकार के परिवहन माध्यमों का अध्ययन क्षेत्र में विकास खण्ड नन्दगॉव एवं गोवर्धन विकास खण्ड में बहुत महत्व है। जनपद मथुरा में परम्परागत परिवहन साधनों का महत्व केवल स्थानीय या क्षेत्रीय स्तर पर उन्हीं भागों में है जहॉ। अभी आधुनिक परिवहन साधनों का विकास नहीं हुआ है। अध्ययन क्षेत्र में परिवहन के आधुनिक विकास माध्यम प्रमुखतः तीन रूपों में देखने को मिलते हैं। जिसमें सड़क परिवहन, रेल परिवहन तथा जल परिवहन ही उपलब्ध है।

परिवहन के साधन–

आज के यातायात के मुख्य साधन रेल, मोटर कार, हवाई जहाज एवं समुद्री सहाज आदि हैं। इन साधनों के विकास के लिये मार्ग बनाने पड़ते हैं। स्थल मार्गो में सड़कें एवं रेलें प्रधान हैं। जलमार्गो में नदियॉ, नहरें एवं समुद्र प्रधान हैं। इनके विकास के लिये मनुष्य को बहुत कुछ प्रकृति पर निर्भर रहना पड़ता है, जो सुविधाऐं प्रकृति द्वारा दी जाती हैं, वे प्रकृति प्रदत्त सुविधाऐं कहलाती हैं लेकिन वे सुविधाऐं जिनका उपयोग मनुष्य अपने प्रयत्नों से प्रकृति प्रदत्त सुविधा का विकास करके करता है, कृत्रिम सुविधाऐं कहलाती हैं। अध्ययन क्षेत्र जनपद मथुरा में रेलमार्ग, सड़क मार्ग एवं जलमार्ग परिवहन के प्रकार हैं तथा इन पर चलने वाली रेलगाड़ी, बैलगाड़ी, तॉगा, रिक्शा, स्कूटर, मोटर साईकिल, कार, जीप, बस, ट्रक तथा नावें आदि परिवहन के साधन कहलाते हैं। मथुरा जनपद में रेल परिवहन, सड़क परिवहन तथा जल परिवहन के प्रमुख साधन हैं।

सड़क परिवहन–

अध्ययन क्षेत्र में प्रारम्भ में मानव व्यावसायिक वस्तुओं को स्वयं या पीठ अथवा पशु की पीठ पर लाद कर ले जाता था। उसके आने–जाने का मार्ग पगडण्डियों द्वारा था। वह स्वयं तथा उनके भार वाहक पशु ऊँची–नींची भूमि पर चढ़–उतर सकते थे परन्तु उसे चढ़ाने तथा उतरने में कुछ परिश्रम अवश्त करना पड़ता था। इन साधनों द्वारा वह अधिक वस्तुओं को नहीं ले जा सकता था। उसका समय भी बहुत अधिक लगता था। इसीलिये स्थायी सड़कों का निर्माण हुआ। इन सड़कों पर गाड़ियों के प्रयोग द्वारा

उनकी गति बढ़ गई तथा आने–जाने में समय कम व्यय होने लगा। अध्ययन क्षेत्र जनपद मथुरा में सड़क परिवहन के अन्तर्गत जनपद में राष्ट्रीय राजमार्ग, प्रादेशिक राजमार्ग, वृहद् जनपदीय मार्ग, सामान्य जनपदीय मार्ग तथा ग्रामीण सड़कें सम्मिलित हैं जो निम्न प्रकार से वर्णित की जा सकती हैं–

राष्ट्रीय राजमार्ग–

जनपद मथुरा से होकर मुम्बई–दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 2 गुजरता है। अध्ययन क्षेत्र में इसकी लम्बाई 83 किमी0 है। राष्ट्रीय राजमार्ग अध्ययन क्षेत्र को न केवल आर्थिक दृष्टि से ही वरन् सामाजिक दृष्टि से भी एक सूत्र में बॉध देते हैं। इन सड़कों द्वारा राज्य एवं विभिन्न बड़े–बड़े औद्योगिक और व्यापारिक नगरों से सम्पर्क आसानी से हो जाते हैं। इन सड़कों के निर्माण, सुधार और रख–रखाव का भार पूर्णतः केन्द्रीय सरकार पर रहता है। अध्ययन क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग की स्थिति मानचित्र द्वारा स्पष्ट है।

राजकीय राजमार्ग–

अध्ययन क्षेत्र में राजकीय राजमार्ग प्रमुख सड़कें हैं। जिनका महत्व व्यापार और उद्योग धन्धों की दृष्टि से अधिक है। ये सड़कें राष्ट्रीय सड़कों अथवा निकटवर्ती राज्यों की सड़कों से मिली हुई हैं। ये सड़कें ही अध्ययन क्षेत्र को उसके मुख्य व्यापारिक औद्योगिक नगरों से जोड़ती हैं। राज्य सरकार पर ही इन सड़कों का निर्माण, रखरखाब और उनको ठीक दशा में रखने का दायित्व होता है। जनपद मथुरा में प्रादेशिक राजमार्गो में मथुरा–आगरा, मथुरा–डीग मार्ग, मथुरा–बरेली मार्ग, मथुरा–हाथरस मार्ग, मथुरा–एटा मार्ग प्रमुख हैं। अध्ययन क्षेत्र में प्रादेशिक राजमार्ग की कुल लम्बाई 63 किमी0 है।

स्थानीय या जिले की सड़कें–

जनपद मथुरा की सड़कें इसके विभिन्न भागों को इसके मुख्य नगरों, उत्पादक केन्द्रों और विभिन्न मण्डियों से जोड़ती हैं। बड़ी सड़कों तथा रेलों से भी इनका सम्बन्ध है। इनको बनाने तथा रखरखाव का दायित्व जिला बोर्डो का होता है।

अध्ययन क्षेत्र में महत्वपूर्ण सड़कों में मथुरा–बरसाना मार्ग, मथुरा–शेरगढ़ मार्ग, मथुरा–नौहझील मार्ग, मथुरा–कोसी मार्ग, मथुरा–वृन्दावन मार्ग, मथुरा–राया मार्ग, मथुरा–गोवर्धन मार्ग, राधाकुण्ड–बरसाना–कोसी मार्ग प्रमुख जनपदीय मार्ग हैं। मुख्य जनपदीय मार्गो की जनपद में कुल लम्बाई 188 किमी0 है।

जनपद मथुरा: परिवहन व्यवस्था

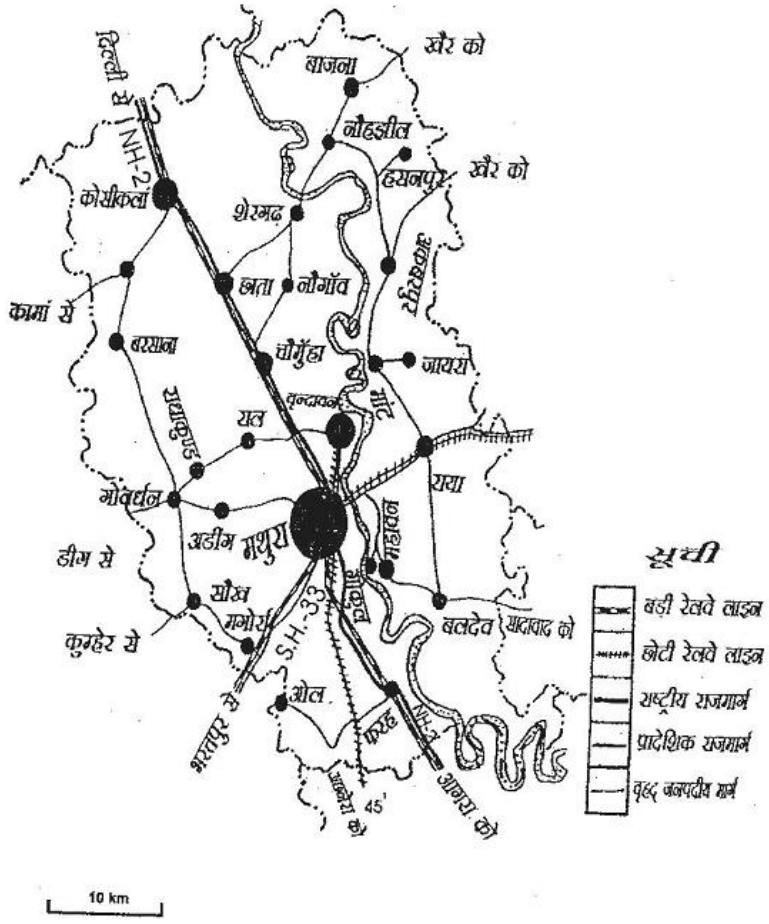

गॉव की सड़कें –

अध्ययन क्षेत्र में इस प्रकार की सड़कें विभिन्न गॉवों को आपस में एक–दूसरे से मिलाती हैं। इनका सम्बन्ध निकटवर्ती जिले और राज्य की सड़कों से भी होता है। प्रायः ये कच्ची–पक्की दोनों प्रकार की होती हैं। जो अधिकतर ग्रामवासियों (गॉव पंचायतों) के सहयोग से ही निर्माण की जाती हैं। जनपद मथुरा में इन सड़कों की कुल लम्बाई 1378 किमी0 है। जिला पंचायत ने भी 48 किमी0 लम्बी सड़कों का निर्माण कराया है। नगर पालिका परिषद, नगर पंचायत तथा छावनी बोर्ड की सड़कों की कुल लम्बाई 150 किमी0 है। इस प्रकार वर्ष 2013 के ऑकड़ों के अनुसार कुल 1910 किमी0 लम्बी सड़कें (मार्ग) जनपद में फैली हैं। अध्ययन क्षेत्र में जनपद के सभी प्रमुख सड़क मार्गो पर रोडवेज बसें चलती हैं। मथुरा–एटा मार्ग, मथुरा–सादाबाद तथा नौहझील–राया मार्ग पर प्राईवेट बसें भी चलती हैं।

रेल मार्ग–

जनपद मथुरा में स्थल परिवहन में रेल मार्ग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अध्ययन क्षेत्र मथुरा से होकर मध्य रेलवे, उत्तरी–पूर्वी रेलवे, पश्चिमी रेलवे की लाइनें गुजरती हैं। जनपद मथुरा में उत्तरी–पूर्वी रेलवे लाइन छोटी लाइन है। जबकि अन्य दोनों लाइनें बड़ी लाइनें हैं। मध्य रेलवे की जनपद में कुल लम्बाई 77. 30 किमी0 है। इस लाइन पर पड़ने वाले प्रमुख स्टेशन मथुरा जंक्शन, कोसीकलॉ, आझई, छाता, वृन्दावन रोड, भूतेश्वर, बाद तथा फरह है। उत्तरी–पूर्वी रेलवे लाइन की जनपद में कुल लम्बाई 65.5 किमी0 है। इस लाइन पर पड़ने वाले प्रमुख स्टेशन सोनई, राया, मथुरा छावनी, मथुरा जंक्शन, भैंसा, मसानी, परखम, वृन्दावन हैं। अध्ययन क्षेत्र जनपद मथुरा से होकर निकलने वाली रेलवे लाइनों पर जनपद की सीमा में 19 स्टेशन पड़ते हैं।

ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। वस्तुतः कृषि प्रसार, विकास एवं वाणिज्यिक सुविधाओं के माध्यम से क्षेत्र के विकास को सक्षम बनाये रखने के लिये न्याय पंचायत स्तर पर ग्रामीण बैंकें, सेवा केन्द्र, साधन सहकारी समितियॉ, बीज एवं उर्वरक वितरण केन्द्र, लघु कृषि यंत्र एवं ट्रैक्टर रिपेयरिंग केन्द्रों की स्थापनाऐं शोधार्थी के अपेक्षित सुझाव हैं।

अध्ययन क्षेत्र मथुरा रिफाइनरी का उत्पादन स्थानीय स्तरों पर सड़क मार्ग द्वारा विपणन होता है जिसमें मथुरा, भरतपुर, अलीगढ़, नोएडा, आगरा, इटावा, कानपुर तथा हाथरस हैं। राष्ट्रीय स्तर पर उत्तरांचल, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, मध्य प्रदेश आदि प्रदेशों को वितरित किया जाता है। रेल मार्ग द्वारा इसका विपणन दादरी, पानीपत, राजस्थान, मध्य प्रदेश, बरेली, परतापुर, जालंधर, गोन्डा, जम्मू, वैतलपुर, कानपुर, झॉसी, कोटा, अमौसी, गुवाहाटी, इलाहाबाद, नजीवाबाद, बरौनी आदि बाजार केन्द्रों को इसकी सप्लाई होती है।

अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर मथुरा रिफाइनरी का बाजार/विपणन का कार्य सऊदी अरब, रूस, नार्वे, ईरान, संयुक्त अरब अमीरात, बेनेजुएला, कुबैत, नाइजीरिया, अल्जीरिया, मैक्सिको, लीबिया, ईराक, अंगोला, पाकिस्तान, कनाड़ा आदि राष्ट्रों के साथ होता है।

निष्कर्ष–

अन्त में कहा जा सकता है कि किसी भी देश या क्षेत्र के विकास के लिये यातायात के साधनों का होना अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन क्षेत्र में उद्योगों का निरन्तर विकास हो रहा है किन्तु विकास की इस गति को और अधिक तीव्र करने की आवश्यकता है और यह तीव्र गति अध्ययन क्षेत्र में परिवहन के साधनों के विकास से ही सम्भव हो सकता है। जिससे पलायन कर रहे जनपद के लोगों को रोजगार भी उपलब्ध करा कर यहॉ के लोगों के पलायन को रोकने के साथ–साथ इनके जीवन स्तर में वृद्धि हो सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित उद्योगों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जैंसे कच्चे माल की कमी, वित्त, बाजार की सुविधाऐं बाजार में तैयार माल न पहुॅच पाना। ये सब समस्याऐं परिवहन के साधनों की कमी के कारण ही इन सभी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या के कारण जनपद में ग्रामीण वातावरण औद्योगिक विकास के लिये उपयुक्त नहीं बन पा रहा है। यद्यपि जनपद में ग्रामीण औद्योगिकीकरण के लिये स्वतंत्रता के पश्चात् सरकार द्वारा अनेक कदम उठाये गये लेकिन आज भी अनेक समस्याओं से ग्रस्त हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत उद्योगों के विकास में आने वाली समस्याओं का यथाशीघ्र समाधान किया जाये जिससे कि जनपद में उद्योगों का विकास हो सके और लोगों का जीवन स्तर ऊॅचा उठ सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वी.पी. रावः संसाधन और पर्यावरण, बसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 2006, पृष्ठ 225.
2- Singh RB. Geography of Rural Development the Indian Micro Level Experience, New Delhi 1986, 135.
3. माथुर (श्रीमती) भावना एवं डॉ0 महेश नारायणः संसाधन भूगोल, बसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 1999, पृष्ठ 380.